६. हमारे परमवीर

तुमने दंतकथाओं में वीरों की शूरता के बहुत से किस्से सुने होंगे । हमारी सुरक्षा के लिए प्राणों का बलिदान करनेवाले सैनिक आज भी हमारे देश में हैं। इस वीरता के लिए उन्हें पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया जाता है । भारतीय सेना का सर्वोच्च अलंकरण 'परमवीर चक्र' है । दुश्मन के साथ जूझते हुए जो सैनिक उच्च कोटि की वीरता एवं त्याग दिखाते हैं, उन्हें 'परमवीर चक्र' प्रदान करके उनकी वीरता को नमन किया जाता है । थलसेना, जलसेना और वायुसेना इन तीनों दलों के सैनिक और अधिकारी इस अलंकरण से अलंकृत होने का सौभाग्य प्राप्त कर सकते हैं । परमवीर चक्र अत्यंत दुर्लभ है जिसे आज तक केवल इक्कीस बार ही प्रदान किया गया है। उनमें से चौदह पुरस्कारार्थियों को मरणोपरांत यह पुरस्कार प्रदान किया गया है ।

साधारण दिखाई देने वाला यह मेडल ब्रांज धातु से बनाया गया है । उसे एक घुमाऊँ मढ़ाई पर बिठाया गया है। एक बैंगनी रंग का सादा फीता उसमें लगाया है। इसके अग्रभाग के मध्य में भारतीय राष्ट्रीय चिह्न है । पिछले भाग पर 'परमवीर चक्र' ये शब्द हिंदी और अंग्रेजी में अंकित किए गए हैं तथा बीचोबीच कमल के दो फूल हैं । क्या, तुम जानते हो कि सावित्रीबाई खानोलकर जी नाम की एक विदेशी महिला ने यह परमवीर चक्र अभिकल्पित किया है? जी हाँ, वे एक युरोपियन महिला थीं ! उन्होंने विक्रम खानोलकर जी से विवाह किया था। विक्रम खानोलकर जी सेना में अफसर थे । सावित्रीबाई को भारत से इतना लगाव हो गया कि उन्होंने भारतीय नागरिकता स्वीकार कर ली थीं । मराठी, संस्कृत और हिंदी इन तीनों भाषाओं में आप धाराप्रवाह रूप में बोल सकती थीं। उन्होंने भारतीय कलाओं और परंपराओं का भी गहन अध्ययन किया था ।

ऐसा माना जाता है कि इंद्रदेवता का वज्र अपराजेय शस्त्र है । तथापि वज्र को अजेय शस्त्र बनाने के पीछे दधीचि मुनि का सर्वोच्च त्याग है ।

एक प्राचीन दंतकथा के अनुसार हजारों वर्ष पहले संसार का सारा जल किसी दैत्य ने चुरा लिया था ।जल के अभाव में निरपराध जन त्रस्त होकर मरने लगे । आश्चर्य की बात यह थी कि वह दैत्य किसी भी साधारण पदार्थ से बने शस्त्र से पराजित होता ही नहीं था, चाहे वह लकड़ी से बना हुआ हो या किसी धातु से! उसे पराजित करने के लिए इन सबसे अलग एक असामान्य शक्ति की आवश्यकता थी। ऐसी स्थिति में यह ज्ञात हुआ कि दधीचि मुनि की अस्थियों में अभूतपूर्व शक्ति संचरित है । यदि इन अस्थियों से कोई शस्त्र निर्मित किया जाए तो वह शस्त्र उस असुर को पराजित कर सकता है!

भला किसी जीवित व्यक्ति से उसकी अस्थियों की माँग की जा सकती है? असंभव! पर... ।

दधीचि मुनि अत्यंत उदार मनोवृत्ति के सज्जन व्यक्ति थे । उन्होंने स्वेच्छा से, सहर्ष जीवनदान कर अपनी अस्थियाँ प्रदान कर दीं जिनसे इंद्रवज्र का निर्माण किया गया । इसी से उस दैत्य को पराजित किया गया ।

२१ परमवीर चक्र विजेता

- ★ मेजर सोमनाथ शर्मा
- ★ लांस नायक करम सिंह
- ★ सेकेंड लेफ्टिनेंट राम राघोबा राणे
- ★ नायक जदुनाथ सिंह
- ★ कंपनी हवलदार मेजर पीरू
- ★ कैप्टन गुरुबचन सिंह सलारिया
- ★ मेजर धन सिंह थापा
- ★ सूबेदार जोगिंदर सिंह
- ★ मेजर शैतान सिंह
- ★ कंपनी क्वॉर्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद
- ★ लेफ्टिनेंट कर्नल अरदेशीर बुरसोर जी तारापोर
- ★ लांस नायक अल्बर्ट एक्का
- ★ सेकेंड लेफ्टिनेंट अरुण क्षेत्रपाल
- ★ मेजर होशियार सिंह
- ★ नायब सूबेदार बाना सिंह
- ★ मेजर रामास्वामी परमेश्वरन
- ★ लेफ्टिनेंट मनोज कुमार पांडे
- ★ ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह यादव
- ★ रायफल मैन संजय कुमार
- ★ कैप्टन विक्रम बत्रा
- ★ फ्लाईंग ऑफिसर निर्मलजीत सेखाँ

फ्लाईंग ऑफिसर निर्मलजीत सिंह सेखाँ
१०८७७ एफ (पी) पीवीसी
स्क्वॉड्रन क्र. १८

१४ दिसंबर १९७१। फ्लाईंग ऑफिसर निर्मलजीत सिंह अपनी ड्यूटी पर बिलकुल तत्पर थे कि अचानक दुश्मन के छह लड़ाकू सेबरजेट वायुयान श्रीनगर पर टूट पड़े । निर्मलजीत सिंह शत्रु के उन वायुयानों की ओर उड़ान भरना चाहते थे लेकिन उसी समय किसी दूसरे वायुयान के उड़ान भरने से धूल उठी। जैसे ही रन-वे साफ हुआ दुश्मन के छह लड़ाकू वायुयान सिर पर मँडराते हुए दिखाई दिए । वे गोलाबारी और बमवर्षा कर रहे थे । देखते ही देखते लड़ाई शुरू हो गई थी, छह के विरुद्ध एक ।

फिर भी निर्मलजीत सिंह ने आकाश में उड़ान भरी। कमाल की बात तो यह थी कि उन्होंने दो सेबरजेटों को तहस-नहस कर डाला । तुरंत उन्होंने दुश्मन के बाकी चार वायुयानों से लड़ाई छेड़ी। यह एक पूर्णत: विषम लड़ाई थी, चार के विरुद्ध एक! वह भी पेड़ जितनी ऊँचाई पर!! अंत में शत्रु के लड़ाकू विमान युद्ध क्षेत्र से भाग गए । श्रीनगर बच गया । लेकिन दुर्भाग्य! इस लड़ाई में फ्लाईंग ऑफिसर निर्मलजीत सिंह का विमान भी टूट चुका था और वे शहीद हो चुके थे!

वस्तुत: फ्लाईंग ऑफिसर निर्मलजीत सिंह को मौत बिलकुल सामने साक्षात दिख रही थी फिर भी उन्होंने जो दृढ़ इरादा और सर्वोत्तम उड़ान कौशल दिखाया वह सचमुच अपने-आप में बेमिसाल है । उन्होंने मात्र कर्तव्य परायणता ही नहीं दिखाई अपितु उससे भी ऊपर उठकर अतुलनीय पराक्रम कर दिखाया, जो अपने आप में एक उच्च कोटि का उदाहरण बन गया है । ऐसे शूरों के सरताज फ्लाईंग ऑफिसर शहीद निर्मलजीत सिंह को हमारा सम्मानपूर्वक अभिवादन!

तुम इंटरनेट पर (wwwparamvirchakra.com) उनके बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हो, जिन्होंने अपना जीवन देश की सेवा में समर्पित कर दिया । इन बहादुरों ने अपने जीवन की परवाह किए बिना शत्रु का सामना किया । इनकी प्रेरक जानकारी जरूर खोजो; पढ़ो और ध्यान में रखो ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

अपराजेय = जिसे कोई पराजित नहीं कर पाया

वज्र = कठोर, शस्त्र

अभिकल्पित = आकार दिया

अतुलनीय = जिसकी तुलना न की जा सके

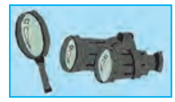

खोजबीन

भारतीय नौसेना के जहाजों की सूची बनाओ ।

स्वयं अध्ययन

माखनलाल चतुर्वेदी की कविता 'पुष्प की अभिलाषा' के आशय को चित्र रूप में दर्शाओ और कविता सुनाओ ।

सुनो तो जरा

किसी प्रसिद्ध व्यक्ति का भाषण सी.डी. से सुनो और उसका महत्वपूर्ण अंश परिपाठ में सुनाओ ।

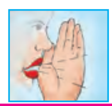

बताओ तो सही

बाढ़पीड़ितों की सहायता कैसे करोगे? इसकी रूपरेखा बनाओ ।

वाचन जगत से

किसी अंतरिक्ष यात्री का अनुभव पढ़ो और सुनाओ ।

मेरी कलम से

२६ जनवरी को दूरदर्शन पर दिखाए गए राष्ट्रीय कार्यक्रम का वर्णन लिखो ।

* उचित पर्याय चुनकर वाक्य पूर्ण करो ।

१. परमवीर चक्र ...... धातु से बनाया गया है ।
(सोना/चाँदी/ब्रांज/पीतल)

२. परमवीर चक्र के बीचोंबीच कमल के ...... फूल हैं ।
(एक/दो/तीन/चार)

३. दधीचि मुनि की अस्थियों से ...... बनाया गया ।
(इंद्रवज्र/वज्रइंद्र/वज्र/अस्थिवज्र)

४. बड़ी ही वीरता से निर्मलजीत सिंह ने ...... को बचाया ।
(श्रीनगर/कश्मीर/देश)

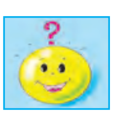

जरा सोचो तो ... बताओ

अगर तुम्हें विज्ञानलोक की सैर करने का अवसर मिले तो .....

सदैव ध्यान में रखो

देशसेवा के लिए हमें सदैव तत्पर रहना चाहिए ।

विचार मंथन

।। शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले ।।

अध्ययन कौशल

सेना में परमवीर चक्र के अतिरिक्त और कौन-कौन-से पुरस्कार दिए जाते हैं, खोजो ।